कला दीर्घा
KALA DIRGHA

April 2014, Volume-14, No. 28

कला दीर्घा
KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2014, वर्ष 14, अंक 28
International Journal of Visual Art, April 2014, Vol. 14, No. 28
Website : www.kaladirgha.com
ISSN : 0976 - 1500

सुबोध गुप्ता का संस्थापन
Installation of Subodh Gupta

आवरण-1 राजेश शर्मा की कला
Cover -1 Art of Rajesh Sharma

आवरण-4 पॉल बॉन की कला
Cover - 4 Art of Paul Bowen

Publisher & Distributor
Anju Sinha
1/95, Vineet Khand, Gomti Nagar, Lucknow-206010 INDIA
✆ +91-522-2725942 Email : anju1965@yahoo.com
website : www.kaladirgha.com

Editor (Honorary)
Dr. Awadhesh Misra
C-361, Rajajipuram, Lucknow-226 017, INDIA
✆ +91-94150 22724 Email : misra.awadhesh@gmail.com
website : www.awadhesharts.com

Co-Editor
Dr. Leena Misra

Representative - Delhi
Hemraj

Representative - U.K.
Rakesh Mathur

Representative - U.S.
Smita Narayan

Representative - Korea
Song, In-Sang

The editor is not responsible for the published articles. For any legal dispute the matter will be in the jurisdiction of the Lucknow Courts. Reproduction in any form is prohibited.

Printed at Archana Advertising Pvt. Ltd., New Delhi

Price : ₹ **150/-, US $ 10; UK £ 6,** for institutions- ₹**250/-** in India

कला दीर्घा
KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2014, वर्ष 14 अंक 28
International Journal of Visual Art, April 2014, Vol. 14, No. 28
website : www.kaladirgha.com

डॉ. अवधेश मिश्र — 04 — कला का यह दौर भी . . .

अशोक भौमिक — 06 — कलाएँ समय और समाज : युद्ध, अकाल और चित्रकला

वेद प्रकाश भारद्वाज — 13 — कला फिर भी रहेगी

डॉ. राजेश कुमार व्यास — 19 — चित्रों में शब्द संवेदना के संस्कार

अखिलेश — 23 — परधान की ''मौतें''

अवधेश अमन — 29 — मौन कृतियों के मुखर सम्वाद

भुनेश्वर भास्कर — 33 — कला में अमूर्तन की सीमा है

विनय कुमार — 38 — मध्य वर्ग का नया सौन्दर्यशास्त्र

एस.एस. हुसैन — 43 — सहज भावों का चितेरा

डॉ. राजेश कुमार व्यास — 46 — कला जगत का अन्दरूनी सच

विनय कुमार — 49 — कला में बौद्धिक विमर्श: इंडिया आर्ट फेयर

Balamani M — 51 — Black and White Memories . . .

Ashrafi S Bhagat — 58 — Metaphorical Time

Gauri Parimoo — 61 — Mother and Artist

R S Yadav — 66 — A Compliment Master of Line

Jeannette de Beauvoir — 69 — Natural Inclinations

Nishant — 71 — Idea, Image and Nostalgia

Avaneet Gandhi — 75 — Recital of Poignant Parable

Ramesh Kandagiri — 79 — Thoughts, Thoughtlessness and Vision

Koumudi Malladi — 86 — Journey of an Emotion

अवधेश मिश्र, संयोजन 7/2013, कैनवस पर एक्रेलिक, 90x90 सेमी.
Awadhesh Misra, Composition, 7/2013, Acrylic on canvas, 90x90 cm.

सम्पादकीय

कला का यह दौर भी . . .

दृश्य कला में इस समय सब गड्डमड्ड चल रहा है। कला के नाम पर कुछ भी रचा जा रहा है या कुछ भी प्रदर्शित हो रहा है। इसमें रचनाकार तो सहभागी हैं ही, निजी बीथिकाएँ और नीलामीघर भी ऐसी रचनाओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं जो चमत्कार दिखाने जैसी या हैरान करने वाली हैं। अथवा यह सोचने पर मजबूर करने वाली हैं कि क्या यह भी प्रदर्श हो सकता है ? स्पॉन्सर्ड कला समीक्षक भी इसी सुर में सुर मिलाकर चल रहे हैं। सचमुच कला का यह संक्रमण काल है।

प्रश्न यह नहीं है कि कैनवास सिमट रहा है या तकनीक, विज्ञान, मशीनरी आदि कला प्रदर्श के रूप में स्थान ले रही हैं अथवा दैनिक जीवन से जुड़े क्रिया कलाप का अनुवाद कला प्रदर्श के रूप में स्थान पा रहा है बल्कि ऐसे कला प्रदर्श महत्त्वपूर्ण कला-आयोजनों में सम्मान पा रहे हैं जो निहायत 'कचरा' हैं। न ही उनमें सौंदर्यबोध है, न ही बौद्धिक तल पर कहीं ठहरते हैं और न ही उनमें कोई ड्यूरेबिलिटी है।

आखिर हम कहाँ जा रहे हैं ? कला का कौन सा समाज और युग रच रहे हैं ? हम कला प्रेमियों को क्या परोस रहे हैं ? युवाओं को किस तरह संस्कारित किया जा रहा हैं ? यह सभी चिन्ताएँ आरम्भ से ही 'कला दीर्घा' की रही है। हम समय-समय पर अपने सुधी पाठकों, कलाकारों एवं कला प्रेमियों को कला के बदलाव, उसकी दिशा-दशा और सरोकारों से परिचित कराते रहे हैं। प्रयास किया है कि प्रख्यात और सर्वमान्य कला चिन्तकों के विचारों से तो आप सबको परिचित कराएँ ही, आदर्श कलाकारों की रचनाओं से भी आपका साक्षात्कार कराते रहें, और यह चिन्ता हमारे साथ-साथ देश के अनेक गम्भीर कला-समीक्षकों, कला-मनीषियों को भी है। अनेक संगोष्ठियों एवं चर्चाओं में यह बात सामने आती रही हैं। उल्लेख करना आवश्यक है कि देश के वरिष्ठ कला समीक्षक विनोद भारद्वाज ने सद्य प्रकाशित उपन्यास 'सेप्पुकु' में कला जगत के ऐसे ही अन्दरूनी सच को उजागर किया है और कला के खतरों को कथा के रोचक कैनवास में बुना है। विनोद भारद्वाज आरम्भ से ही 'कला दीर्घा' के माध्यम से कला की प्रवृत्तियों, सम्भावनाओं आदि के प्रति अपनी गहन चिन्ताओं को पाठकों/कला प्रेमियों से साझा करते रहे हैं। इनकी इस पुस्तक 'सेप्पुकु' पर इस अंक में वरिष्ठ कवि एवं कला समालोचक डॉ. राजेश कुमार व्यास ने विस्तार से चर्चा की है।

जहाँ एक ओर गम्भीर और अगम्भीर कला पर बहस छिड़े होना एक समस्या है, यानि एक पारम्परिक तरीके से छेनी-हथौड़ी या कैनवास पर काम करने के बजाय अनेक तरह के इंस्टालेशन, बीडियो आर्ट (न्यू मीडिया) जैसे प्रयोगों की बाढ़ आ जाने से जहाँ कला संग्राहक, कला प्रेमी आदि भ्रमित हैं, वहीं युवा कलाकार बिल्कुल असमंजस की स्थिति में है। वह किधर जाएँ? प्रश्न है। अकादमिक कला को अपनाएँ या कला में मशीनी, तकनीकी प्रयोगों को अपनाएँ? और यदि न्यू मीडिया के प्रयोगों में हाथ आजमाना चाहते है तो उसे कौन स्पॉन्सर करेगा ? कौन एक्ज़िक्टि

करेगा ? कौन कलेक्टर उसपर हाथ डालेगा ? क्योंकि यह कला किसी कला प्रेमी के ड्रॉइंग रूम में या किसी ऑफिस की दीवार पर जगह पाएगी, कहना मुश्किल है। सरकारी कला संस्थाएँ भी शायद ही अपने संग्रह में रखें, तो फिर इस रचना/प्रदर्श का क्या होगा ? और यदि अकादमिक कला, जिसका प्रशिक्षण कला महाविद्यालयों में दिया जाता है, की ओर जाएँ तो कोई बड़ी गैलरी और तथाकथित कला समीक्षक ध्यान नहीं देंगे। यह बड़ा संकट आज युवा कलाकारों के सामने है। और वह तय नहीं कर पा रहे हैं कि उनकी रचनाधर्मिता की दिशा-दशा क्या हो ? और यह समस्या केवल उन्हीं की नहीं बल्कि अध्यापकों और कला-प्रशिक्षण से भी सीधे तौर पर जुड़ रही है।

न्यू मीडिया/इंस्टालेशन के ऐसे कुछ उदाहरणों की चर्चा वरिष्ठ कला समीक्षक वेद प्रकाश भारद्वाज ने भी इस अंक में की है। ''कला फिर भी रहेगी'' इस शीर्षक से लिखे अपने आलेख में भारद्वाज ने उपर्युक्त 'कचरे' प्रदर्श का जिक्र किया है, जिसे केवल उदाहरण न मानकर एक गंभीर चिन्ता मानी जानी चाहिए और कला महाविद्यालयों में दी जाने वाली कला-शिक्षा, कला-अध्यापकों, कला-समीक्षकों, वीथिकाओं, कला-संग्राहकों आदि सभी की भूमिका पर एक व्यापक चर्चा की जानी चाहिए और हमारी समकालीन कला की दिशा-दशा तय करने के लिए सभी जिम्मेदार कारकों को एक साथ आना चाहिए।

वरिष्ठ कला समीक्षक अशोक भौमिक ने भी 'कला दीर्घा' के माध्यम से कला-जगत में सक्रिय अन्दरूनी तंत्र पर कई बार सवाल खड़े किए हैं और बड़ी सघनता से बुने गए ताने-बाने के एक-एक धागे की पहचान कला-प्रेमियों को करायी है। इस पर आधारित उनके उपन्यास ''मोनालिसा हँस रही थी'' की चर्चा हम पिछले अंक में कर चुके हैं।

हिन्दी में कला-पत्रकारिता आसान नहीं है। तब खासकर जब सरकारी-गैर सरकारी कला पत्रिकाएँ लगभग ठप हैं। हिन्दी में कला पुस्तकों का भी बेहद अभाव है, फिर भी 'कला दीर्घा' अपने प्रकाशन की निरन्तरता बनाए रखते हुए सदैव कला प्रेमियों, कलाकारों और अपने सुधी पाठकों को बाज़ार से बिना प्रभावित हुए स्तरीय/गंभीर कला सामग्री, कला की शास्त्रीय परम्परा, लोक परम्परा, नवीन और सार्थक कला प्रयोग, महत्त्वपूर्ण कला चिन्तन से साक्षात्कार कराती रही और उन समस्याओं, चिन्ताओं से भी आगाह कराया है जो जायज थे। कभी दुहराव नहीं किया, अनुवाद और स्तरहीन सामग्री परोसने से बचे, कोई ऐसा समझौता नहीं किया जिससे कला का नुकसान हो। संतोष है, कि पाठकों, कला प्रेमियों, कलाकारों और कला-चिन्तकों का भी भरपूर सहयोग मिला। अनगिनत पत्र और दूरभाष पर निरन्तर सराहना मिलती रही है, यही हमारा सम्बल है।

यह अंक आपके हाथ में तब होगा जब भारतीय गणतंत्र भी उत्सव मना रहा होगा और एक नये बदलाव की ओर होगा। तो आओ सब मिलकर भारत के एक नये, स्वस्थ्य सांस्कृतिक वातावरण का ताना-बाना बुनें।

प्रकाश कर्मकर और प्रफुल्ला दहानुकर जिन्होंने हाल में ही हम सबसे विदा ली है, को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि।

प्रकाश कर्मकर की कलाकृति
Painting of Prokash Karmakar

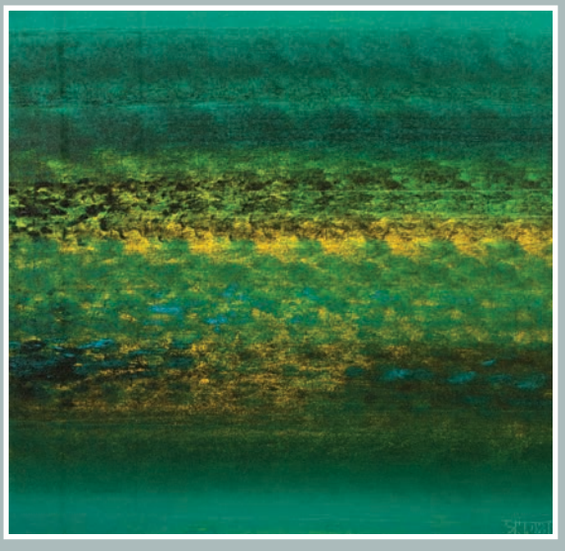

प्रफुल्ला दहानुकर की कलाकृति
Painting of Prafulla Dahanukar